करेंट अफेयर्स 13 अक्टूबर 2022

ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने 'सभी के लिए फुटबॉल' लॉन्च किया

फुटबॉल की संस्कृति को जमीनी स्तर तक ले जाने के लिए ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने राज्य में 'सभी के लिए फुटबॉल' लॉन्च किया है। यह कार्यक्रम फीफा द्वारा ओडिशा में कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (केआईआईटी) और कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (केआईएसएस) के साथ साझेदारी में शुरू किया गया है।

पहल के तहत

• लगभग 2000 स्कूलों में 43,000 से अधिक फुटबॉल बच्चों को वितरित किए जाएंगे। यह भारत में फीफा का पहला ऐसा कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य स्कूली बच्चों में फुटबॉल को बढ़ावा देना है।

• वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर कार्यक्रम में शामिल होते हुए पटनायक ने कहा कि फुटबॉल सबसे लोकप्रिय खेल है और दुनिया भर के लोगों को एक साथ लाता है।

• फीफा ने इस कार्यक्रम के लिए ओडिशा को चुना और इस कार्यक्रम को ओडिशा लाने में केआईआईटी-केआईएसएस के संस्थापक अच्युत सामंत की भूमिका की सराहना की।

• पटनायक ने ओडिशा में फुटबॉल के विकास के लिए फीफा के साथ भावी साझेदारी की आशा की। 'फुटबॉल फॉर स्कूल्स', फीफा की निदेशक फातिमाता सो सिदीबे ने वर्चुअल प्लेटफॉर्म से जुड़कर ओडिशा में खेलों को बढ़ावा देने के लिए मुख्यमंत्री और ओडिशा सरकार की भूमिका की सराहना की।

• इस अवसर पर खेल मंत्री ने यूनिट-9 गर्ल्स हाई स्कूल और कैपिटल हाई स्कूल, भुवनेश्वर की छात्राओं को फुटबॉल भेंट की.

पद्म श्री डॉ तेम्सुला एओ का निधन

नागालैंड राज्य महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष, शिक्षाविद, प्रसिद्ध लेखिका और पद्म श्री डॉ तेम्सुला एओ का दीमापुर के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। वह 80 वर्ष की थीं। डॉ तेम्सुला एओ, जिन्हें पूर्वोत्तर में एक प्रमुख साहित्यिक आवाज के रूप में जाना जाता था, को 2007 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। वह साहित्य में विशिष्टता के लिए नागालैंड गवर्नर अवार्ड, मेघालय के राज्यपाल के स्वर्ण पदक और साहित्य अकादमी की प्राप्तकर्ता थीं। पुरस्कार, अन्य सम्मानों के बीच।

डॉ तेम्सुला एओ ने अपना लगभग आधा जीवन नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी (एनईएचयू) में अध्यापन में बिताया। वह वहां से 2010 में अंग्रेजी के प्रोफेसर और स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड एजुकेशन एनईएचयू के डीन के रूप में सेवानिवृत्त हुईं। उनकी साहित्यिक कृतियों का जर्मन और फ्रेंच के साथ-साथ हिंदी, असमिया और बंगाली में अनुवाद किया गया है।

कदवुर पतला लोरिस अभयारण्य

मुख्य तथ्य

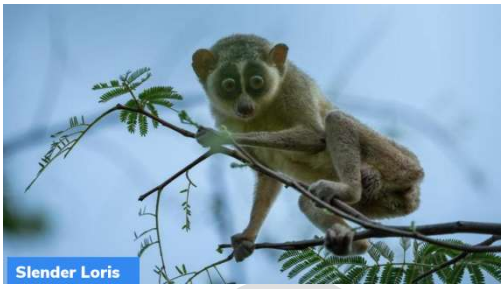

- तमिलनाडु भारत के पहले स्लेंडर लोरिस अभयारण्य की मेजबानी करने के लिए तैयार है।
- कडावुर पतला लोरिस **अभयारण्य** नामित, यह करूर और डिंडीगुल जिलों में 11,806 **हेक्टेयर** में फैला होगा, जो करूर में कदवुर तालुक और डिंडीगुल **में** डिंडीगुल पूर्व, वेदसंदूर और नाथम तालुक के क्षेत्रों को कवर करेगा।
- सरकार ने वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की धारा 26ए(1)(बी) के तहत नए अभयारण्य की स्थापना को अधिसूचित किया।
- **यह राज्य में लुप्तप्राय और कमजोर प्रजातियों के संरक्षण की दिशा में तमिलनाडु सरकार के जारी प्रयासों का हिस्सा** है।
- पिछले 15 महीनों में, **इसने पाक खाड़ी में भारत के पहले डुगोंग संरक्षण रिजर्व, तिरुपुर में नंजरायन टैंक पक्षी अभयारण्य और विल्लुपुरम में काज़ुवेली पक्षी अभयारण्य के साथ-साथ तिरुनेलवेली में अगस्त्यमलाई में हाथी रिजर्व में राज्य के पांचवें हाथी रिजर्व को अधिसूचित किया था।**

पतला लोरिस के बारे में

जीनस लोरिस से संबंधित पतला लोरिस, **श्रीलंका और दक्षिणी भारत के मूल निवासी हैं। ये प्रजातियां अपना अधिकांश जीवन** पेड़ों में बिताती हैं, **धीमी और सटीक गति के साथ शाखाओं के ऊपर यात्रा करती हैं। ये निशाचर जानवर झाड़ीदार जंगलों,** अर्ध-पर्णपाती जंगलों, **दलदलों और उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों में पाए जाते हैं। हालांकि कीटभक्षी,** ये जानवर पौधों का भी सेवन **करते हैं। वे स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे कृषि में भी महत्वपूर्ण** हैं क्योंकि वे फसलों के लिए **हानिकारक कीटों का सेवन करते हैं। इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर** (IUCN) रेड लिस्ट द्वारा उन्हें लुप्तप्राय **जानवरों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। ये लुप्तप्राय प्राइमेट भारत के वन्यजीव** (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची I के **तहत सूचीबद्ध हैं। यह प्रजाति वर्तमान में भारत में सभी प्राइमेट्स में सबसे कम अध्ययन की गई है। गलत धारणा के कारण उनका शिकार किया जाता है कि उनके पास जादुई शक्तियां हैं। अवैध शिकार और आवास का नुकसान उनके सामने आने** वाले मुख्य खतरे हैं। बबूल के पेड़ का नुकसान, आवास का विखंडन, पालतू व्यापार और मांस का शिकार इस प्रजाति की घटती आबादी के कारणों में से हैं।

पीएम-डिवाइन क्या है?

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए प्रधान मंत्री विकास पहल (पीएम-डिवाइन) नामक एक नई योजना को मंजूरी दी है।

मुख्य तथ्य

- पूर्वोत्तर क्षेत्र (एनईआर) **में विकासात्मक अंतराल को दूर करने के लिए केंद्रीय बजट** 2022-23 **के दौरान केंद्र सरकार द्वारा पीएम**-डिवाइन योजना की घोषणा की गई थी।
- **हाल ही में शुरू की गई योजना को** 15वें वित्त आयोग के शेष चार वर्षों के लिए 2022-23 से 2025-26 तक लागू किया जाएगा।
- **पूर्वोत्तर क्षेत्र में बुनियादी न्यूनतम सेवाओं** (बीएमएस) **में कमियों को दूर करने के लिए इसकी घोषणा की गई थी।**

- इसे केंद्र सरकार द्वारा पूरी तरह से वित्त पोषित किया जाएगा और केंद्रीय पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय (DoNER) द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा।
- सरकार ने इस योजना के क्रियान्वयन के लिए 6,600 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं।
- यह योजना बुनियादी ढांचा परियोजनाओं और सामाजिक विकास परियोजनाओं के लिए वित्त पोषण प्रदान करती है जो पूर्वोत्तर क्षेत्र में विभिन्न क्षेत्रों में विकास अंतराल को दूर करने में मदद करेगी।
- इस पहल का अंतिम उद्देश्य पूर्वोत्तर क्षेत्र में विशेष रूप से महिलाओं और युवाओं के लिए आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देना है।
- देरी और नकदी संकट के जोखिम को कम करने के लिए, इस योजना के तहत परियोजनाओं को यथासंभव इंजीनियरिंग-खरीद-निर्माण (ईपीसी) के आधार पर लागू किया जाएगा।
- पीएम-डिवाइन योजना मौजूदा केंद्र और राज्य की योजनाओं का विकल्प नहीं होगी।
- नई योजना अन्य मौजूदा एमडीओएनईआर योजनाओं से अद्वितीय है जो पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास के लिए लागू की गई हैं।
- अन्य योजनाओं के तहत परियोजनाओं का औसत आकार लगभग 12 करोड़ रुपये है। पीएम-डिवाइन योजना बुनियादी ढांचे और सामाजिक विकास परियोजनाओं को सहायता करती है जो आकार में बड़े होते हैं। यह केवल अलग-अलग परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय एंड-टू-एंड विकास समाधान भी प्रदान करेगा।
- 2022-23 के लिए, यह योजना उन सभी परियोजनाओं को कवर करेगी जो हाल के केंद्रीय बजट के दौरान शुरू की गई थीं।
- भविष्य में, यह उन परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करेगा जो आम जनता के लिए पर्याप्त सामाजिक-आर्थिक प्रभाव या स्थायी रोजगार के अवसर पैदा करने का वादा करती हैं। इनमें सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में बुनियादी ढांचा, सरकारी स्कूलों में व्यापक सुविधाएं आदि शामिल हो सकते हैं।

कुआफू-1: चीन का पहला अंतरिक्ष आधारित सौर दूरबीन

उन्नत अंतरिक्ष-आधारित सौर वेधशाला (एएसओ-एस) - चीन का पहला अंतरिक्ष-आधारित सौर दूरबीन - हाल ही में लॉन्च किया गया था।

मुख्य तथ्य

- उन्नत अंतरिक्ष-आधारित सौर वेधशाला (एएसओ-एस) को चीन के उत्तर-पश्चिमी भाग में जिउक्वान सैटेलाइट लॉन्च सेंटर से लॉन्ग मार्च-2डी कैरियर रॉकेट पर लॉन्च किया गया था।
- सूर्य को पकड़ने और उसे वश में करने की कोशिश करने वाले एक पौराणिक दैत्य के नाम पर इसका उपनाम कुआफू-1 रखा गया है।
- सौर मिशन, जिसके 4 साल तक चलने की उम्मीद है, वैज्ञानिकों को "सौर अधिकतम" (जब सूर्य में सबसे अधिक सूर्य के धब्बे होते हैं) के दौरान सूर्य की पहले की अभूतपूर्व छवियों को पकड़ने और उनका अध्ययन करने में सक्षम करेगा। सौर अधिकतम वर्ष 2025 के आसपास होने की उम्मीद है।
- ASO-S चीन का पहला पूर्ण पैमाने का उपग्रह है जो सूर्य पर शोध करने के लिए समर्पित है। यह दुनिया का पहला सोलर टेलीस्कोप है जो सोलर फ्लेयर्स और कोरोनल मास इजेक्शन दोनों की एक साथ निगरानी करने में सक्षम है।
- यह पृथ्वी की सतह से 720 किमी ऊपर की कक्षा से सूर्य का अध्ययन करेगा।
- मिशन पूरे सूर्य के वेक्टर चुंबकीय क्षेत्र का एक साथ अवलोकन करने, सौर ज्वालाओं की उच्च ऊर्जा पर इमेजिंग स्पेक्ट्रोस्कोपी, और डिस्क पर और आंतरिक कोरोना में सौर फ्लेयर्स और कोरोनल मास इजेक्शन के गठन और विकास का अध्ययन करने में सक्षम है।
- इससे सौर विस्फोटों की भौतिकी की समझ और सौर मौसम की भविष्यवाणी करने की क्षमता में सुधार होगा।

- सौर उपग्रह, सान्या, काशगर और बीजिंग के ग्राउंड स्टेशनों को हर दिन सूर्य के चुंबकीय क्षेत्र, सौर फ्लेयर्स और कोरोनल मास इजेक्शन से संबंधित 500 जीबी डेटा भेजेगा।
- सौर विस्फोट के दौरान, उपग्रह हर सेकेंड में ग्राउंड स्टेशनों पर तस्वीरें भेज सकता है।
- ग्राउंड स्टेशनों से, डेटा को पैकेज में पर्पल माउंटेन ऑब्जर्वेटरी में 2,048-कोर कंप्यूटर में स्थानांतरित किया जाता है।
- यह मिशन नासा के पार्कर सोलर प्रोब और ईएसए के सोलर ऑर्बिटर के समान है।
- भारत सौर वातावरण पर शोध करने के लिए 2023 में आदित्य-एल1 नामक एक समान सौर मिशन शुरू करने की योजना बना रहा है।

RACE IAS